just remember yourself, 'I am',
it is enough to heal your mind

॥ स्व ला जाणा, स्वस्थ रहा ॥

e-magazine

Jai Guru

NISARGAVAANI निसर्गवाणी

vol. 1/2025 (July to September) अंक १/२०२५ (जुलै ते सप्टेंबर)

निसर्गबानी

ನಿಸರ್ಗವಾಣಿ

श्री निसर्गदत्त समाधी चॅरिटेबल ट्रस्ट यांच्या वतीने प्रकाशित

Editor
Dr. Dheeraj Sarvadnya +91 9881314214

Editorial Team
Mandar Ghaisas +91 9869868279 Vijaya Nazre +91 9403707936
Smita Thorat +91 8698863395 Tushar Naik +91 8369105437

Design: Nisargavaani team
Layout: Zen Publications with inputs from Nisargavaani team

www.nisargdattasamadhi.in
eMail. nisargadattasamadhitrust2025@gmail.com

Appeal for Articles

As any journal depends on articles from potential writers, we appeal all of you to send in articles to us. Self-Knowledge is beyond all religions, caste and creed. Remembering this aspect *Nisargavaani* will contain wide range of topics not only related to the Self-Knowledge expounded by Shri Nisargadatta Maharaj specifically but also Self-Knowledge teachings of various saints, experiences related to the practice of their methods, biographies, teachings, experiences related to the practice of methods taught by other spiritual masters,teachings and stories from religions other than Hinduism, interpretations of sacred texts and verses, spiritual travel and insights, poetry and of course feedback from our worthy readers. Our firm belief is that Spirituality is in itself has a wide and diverse covering aspects.

Suggestions

As a guideline, we request that as far as possible articles should be short (say around 750 words), medium (around 1500 words) or in longer format (around 2300 words).

Please send in your contributions through e-mail to
nisargavaani240125@gmail.com

निसर्गदत्त समाधी चॅरीटेबल ट्रस्ट का विशेष लोगो (चिन्ह)

चित्रकार: कु. वैखरी वाडये, वसई (सातवी कक्षा विद्यार्थी)

निसर्गदत्तआश्रम में जब भी कोई शिष्य या देश-विदेश से कोई साधक दर्शनार्थ जाते थे तो अधिकतर ने निसर्गदत्त महाराज की पहली झलक इसी रूप में पाई होगी..वे शांत भाव से बैठे होते | और बीच बीच में बीडी निकालकर लाइटर से उसे सुलगाते | परन्तु बहुत बार ऐसा भी होता कि वे एक लम्बी डिब्बी से कुछ अगरबतियाँ निकालते, उन्हें लाइटर से सुलगाकर धीरे से अगरबत्ती पात्र में लगाते | उन जलती हुई अगरबत्ती के सिर पर दिखनेवाली लालबुंद चिंगारीसे निकलने वाला हल्का सुगंधित नीला धुआँ जब वातावरण में फैल जाता, तो ऐसा प्रतीत होता, मानो श्री महाराज उसी धुप धुएँ की लहरों में कही खो से गए है | एक शांति, एक समाधिस्त भाव में लीन | साधारण लोगों के लिए तो यह एक रोज का, सामान्य सा दृश्य था| अगरबत्ती की मधुर सुगंध और उससे मन को मिलने वाला क्षणिक आनंद | बस्स ! इतना ही नजर आता था | परंतु श्री महाराज जैसे आत्मज्ञानी पुरुष हर बात को ज्ञानदृष्टी से ही देखते है | और वही दृष्टि कुछ इस प्रकार होती है |

देखो इस अगरबत्ती को ..उसमे अग्नि है, धुआँ है, और सुगंध भी है | यही तो शरीर का भी सत्य है | यह देह इस अगरबत्ती की तरह है | जब तक उसमे जीवन की अग्नि जल रही है, तब तक उससे अनुभव का सुगंध फैलता है | जिस प्रकार अगरबत्ती के छड़ी में अग्नि से धुआँ उठता है और सुगंध फैलता है, उसी प्रकार यह देह भी एक साधन है | अग्नि इस में प्रज्वलित है, प्राण उसका धुआँ और जागरूकता यानि चेतना वही उसमे से

With Best wishes to Nisargavaani
e-magazine on its maiden journey

Rahul Consultancy
9137831257

1. Financial Health Check-up & Due-Diligence
2. Risk Advisory Services
3. Financial modelling, projections and Valuation
4. HNI Taxation
5. Income Tax Compliances
6. Society Accounts & Audit

We provide comprehensive financial expertise, ensuring businesses have structured financial management, optimized cost strategies, and strategic financial planning. Our services are designed to bridge the gap between finance and business strategy, helping organizations achieve financial excellence along with Law Compliances.

I am unborn, I was unborn and I shall remain unborn.

उठनेवाला दिव्य सुगंध है | यह अग्नि की छोटी सी चिंगारी ही वास्तव में ज्ञान का एक सूक्ष्म प्रकाश है | यह देहरूपी मसाला ही उस चिंगारी का इंधन है | इस चिंगारी से जो धुआँ निकलता और चारो और फैलता है, वही मन है | जब तक इस देहमसाले से इंधन मिलता है तब तक यह ज्ञानचिंगारी भी जलती रहती है और मन की लीला चलती रहती है | लेकिन जैसे ही यह छोटी सी चिंगारी बुझ जाती है, तब मन भी शांत हो जाता है | और जब मन शांत हो जाता है, तब यह प्रतीत होने वाला जगत भी अपने आप विलीन हो जाता है | जब यह अहंरूपी चिंगारी पुनः जलने लगती है, तब सब कुछ फिर से दिखाई देने लगता है | लेकिन जब जिस शुद्धज्ञानस्वरूप अधिष्ठान से इस अहं चिंगारी का उदय और अस्त होता है, वह आधार तो हमेशा अचल, अनंत और अपरिमित रूप से भीतर उपलब्ध रहता है | जब तक अगरबती जलती रहती है, तब तक उसकी सुगंध फैलती रहती है | और जैसे ही उसका मसाला ख़तम होता है, सुगंध भी समाप्त हो जाता है | वैसे ही जब तक शरीर का सत्व जलता रहता है, तब तक "मै हूँ" की उपस्थिति, अस्तित्व पहला प्रकाश बना रहता है |

परमेश्वर ने भी व्यक्तित्व धारण किया, जिन्हें हम 'सद्गुरु' कहते है I अनेक जन्मों केप्रभाव से मनुष्य उनकी कृपा का पात्र बनता है और वही परमेश्वर सद्गुरु के व्यक्तित्व में मनुष्य पर दया करता है I

– स्वामी विलासानंद

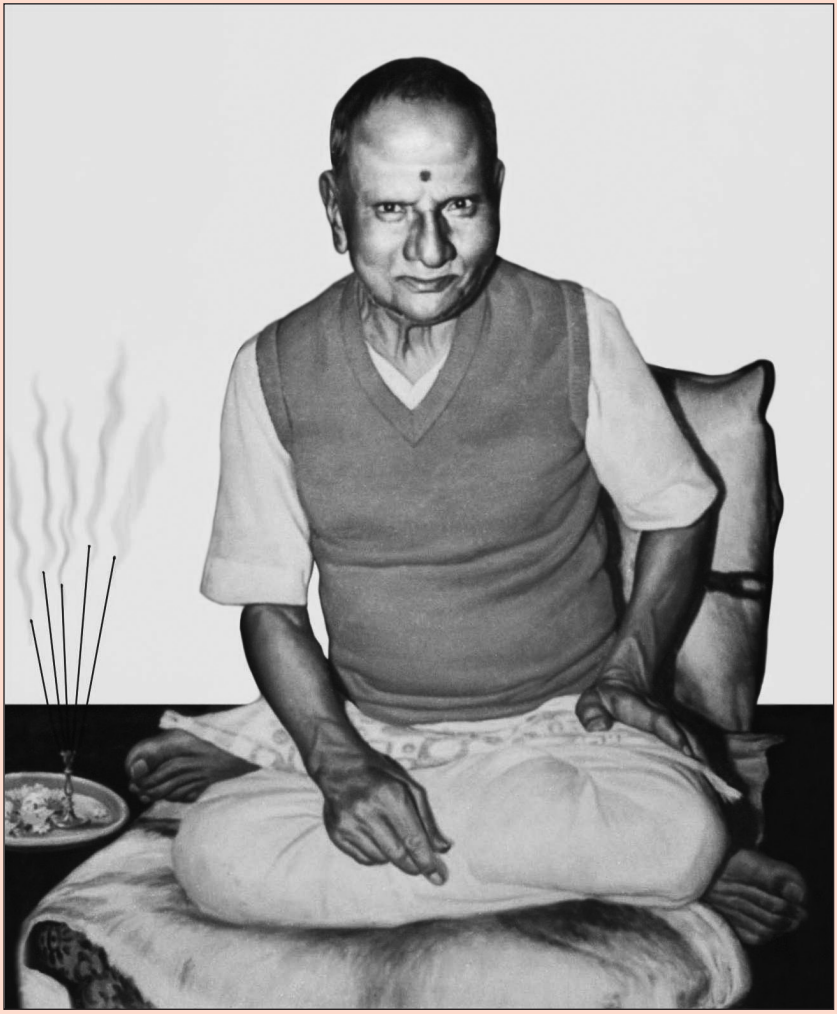

महाराष्ट्र के दक्षिण कोकण स्थित साधु-संत-महंत-संन्यासीयों की आध्यात्मिक और सांप्रदायिक परंपरा और योगदान

विषय प्रवेश

महाराष्ट्र याने महान राष्ट्र..! साधु-संत, पंडित और वीरों की भूमी याने महाराष्ट्र भूमी । संत योगी-राज श्री ज्ञानेश्वर, संत नामदेव महाराज, संत एकनाथ, संत तुकाराम, समर्थ रामदास ऐसे महान संत, जो कवी भी थे। राजा छत्रपती शिवाजी महाराज की पावन भूमी याने महाराष्ट्र । इस महान भूमी मे कोकण नाम का एक प्रभाग सह्याद्री और अरब सागर के बीच में है। जलश्री-वनश्री-शैलश्री से निसर्गसंपन्न भूमी याने दक्षिण कोकण भूमी की अपनी एक अलग संपन्न अध्यात्मिक, सांस्कृतिक, सांप्रदायिक पहेचान है ।

कोंकण शब्द व्युत्पत्ति

मराठी भाषा मे 'कोंकण' शब्द की व्युत्पत्ति -उत्पत्ति और विकास -(लेखक कृ.पां. कुलकर्णी) इस ग्रंथमे चर्चा की है । ऊसका सारांश इस प्रकार है- 'प्राचीन संस्कृत में 'कोंकण' शब्द को विभिन्न तरीकों से लिखा जाता था।' 'कुकुण, कुंङकण, कोंङकण, कोंकण।' 'कन्नड़ भाषा में, कोंङकू शब्द का अर्थ ऊपरी भूमी है।' 'कोंङकु+वन = कोंङकुवन = कोंकण।' व्युत्पत्ति का समर्थन इस तथ्य से होता है कि ऐसी ऊँची और नीची भूमी कोंकण में सर्वत्र पाई जाती है। गंगा नाम के महाराजाओं ने ७००-१०००

इस.सन. के बीच मैसूर और पश्चिमी तट क्षेत्र पर शासन किया। वे राज्य करते थे उन्हीं से इस देश को कोंकण नाम मिला होगा। 'गंगवन -गोंगवान कोंकण' यह व्युत्पत्ती भी स्वीकार्य है । पं.महादेवशास्त्री जोशी द्वारा दिये गये विवरण में 'कोंग-कोंगवान-कोंकण' यह व्युत्पत्ती है ।

दक्षिण कोकण की साधु परम्परा

दक्षिण कोकण की साधु और संन्यासीं कों की परम्परा मध्ययुग मे आरंभ होती है। उस वक्त महाराष्ट्र मे देवगिरी स्थित यादव राजवंश की सत्ता थी । कोकण प्रांत मे इस वक्त कदंब राजवंश के महाराजने आद्यगौड ब्राह्मण को कुछ अधिकार दिए थे । इ.स. १०२०से १६९६ तक द. कोकण मे कुडाळदेशकर आद्य गौड ब्राह्मणों की सत्ता इ.स. तेरवी सदी मे कुडाळ (कुडुवलपत्त) राजधानी के शहर के पास स्वर्णमठ स्थापित किया गया । इस वक्त चंद्रभान और सुर्यभान सत्ताधिशोंने शांकरमतानुयायी मठ स्थापीत किया और श्रीमद् विद्यापूर्णानंद महाराज पहले मठाधिश बन गए। बादमे चिंदर और गोळवण ग्राम मे मठ स्थापना हो गयी । कुडाळ प्रांतमे सोनवडे स्वर्ण -मठ गोळवण, चिंदर के बाद आज वेंगुर्ले तहसील मे दाभोली (दर्भावलि, दभ्भावलि, दाभोली) यहा मठ स्थापन हुआ । कुडाळदेशकर के दाभोली मठ तेज तपश्चर्या से उन्नत है । इस मठके आद्यस्वामी श्री पूर्णानन्द संपूर्ण कुडाळ -देशकर समाज के धर्मगुरू थे।

संसारे सत्त्वयोगाय धर्मनिर्झर वाहिनम् ।
कुडाळ देशचैतन्यं पूर्णानन्दं भजामहे ||

(सत्त्व याने मनोबल) धर्म यह चैतन्य शक्ती है और वह समाजमे सत्त्व याने मनोबल देती है ।यह मनोबल समाप्त हुआ तो समाज का अधःपतन होता है, यह ऐतिहासिक सत्य है ।

दाभोली मठ और स्वामी पूर्णानंद

कुडाळदेशकर के शासन के बाद धार्मिक शक्ति भी समाप्त हो गई। गोलवण मठ को कई समस्याओं का सामना करना पड़ा। मठ का आश्रय स्थल लुप्त हो गया ।

मठाधीशों के बीच मतभेद हो गये और मठ के वित्तीय बोझ की बाते सामने आई। फिर स्वाभिमानी परिचित १७४५ में कुडाळ प्रांत के ध्यवस्ती के दाभोली गांव में एक मठ बनाया गया था। और कुडाळदेशकरों के धार्मिक नये उज्ज्वल मठ का उदय हुआ। यही आज का दाभोली मठ है । प्रथम मठाधीश श्रीपूर्णानन्द स्वामीजीको शुरू से ही आश्रम प्रिय था। पिछले आश्रम में वे सेडने नामक स्थान के निकट एक गुफा में बैठकर तपस्या करते थे। उस जगह के मालिक बालकृष्ण प्रभु शेडनकर ने मठ बनाने के लिए अपनी जमीन श्री पूर्णानंद को दान कर दी। दाभोली के अन्य दो अच्छे व्यक्ति श्री हैं । केशव प्रभु एवं श्री. गोपाल प्रभु ने मठ के खर्च के लिए मठ को भूमी दान में दी। अन्य शिष्यों ने अन्य सामग्री दी और नये मठ को नये रूप में लेकर स्वामी के पास गये । श्रीपूर्णानन्द स्वयं अलग-थलग थे, इसलिए उन्होंने लोगों के दैनिक मामलों पर अधिक ध्यान नहीं दिया। परंतु उनका व्यक्तित्व इतना प्रभावशाली एवं प्रेरक था कि संपूर्ण समाज जागृत हो गया । अनजाने में ही सब पर एक पवित्र अनुष्ठान हो गया। विरोधी भावना किसी के स्वप्न में भी उत्पन्न नहीं हो सकती। सभी लोग उन्हें श्रीगुरु का अवतार मानने लगे और उनके दर्शन से स्वयं को धन्य महसूस करने लगे। कुडाळदेशकरों की संपूर्ण मठ परंपरा में, इस श्रीपूर्णानंद के जितने आधिकारिक मठाधीश किसी और के पास नहीं थे। इतिहास में किसी अन्य पीठ में ऐसे व्यक्ति नहीं मिलते।वास्तव में प्रसिद्ध व्यक्ति के भाग्य से धन्य, श्रीपूर्णानंद ने बाद में भी कई चमत्कार कर दिखाये और दाभोली मठ को समाज मे एक पवित्रस्थान का दर्जा मिला ।

– (कु. स. इतिहास)

स्वामी श्रीचिदानंद

श्रीपूर्णानंद स्वामीजीने कुडाळदेशकर समाज में नई शक्ति का संचार किया और उसे पुनः चेतना में लाकर अपना सांसारिक कार्य किया। बाद में जब नये मठाधीश की नियुक्ति करना आवश्यक हुआ तो आजगांव के प्रभुमतकरी परिवार के तपस्वी शिष्य श्री.रुद्रजीपंत पूर्वाश्रम के पूर्णानंद के शिष्य थे। मठाधीश बनने से पहले, सिधे एक स्वामी थे जिन्होंने रुद्रजी की कृपा की थी। रुद्रजी और सिद्धप्रभु के प्रथम मिलन का योग भी महत्वपूर्ण है। एक दिन जब रुद्रजी खड़ेसल नामक जंगल में रहे थे । तब उन्होंने एक दिव्य सिद्ध पुरुष को बाघ पर सवार होकर अपनी ओर आते देखा। रुद्रजी

भी उस समय केवल दस-बारह वर्ष के थे। लेकिन वे डरे नहीं | जब भाग्य उदय होता है तो बुद्धि का सुझाव दिया जाता है। बालक रुद्रजी बिना किसी डर के दौड़े और उस सिद्धपुरुष के चरण पकड़ लिए। इस सिद्धपुरुष का अर्थ है दाभोली के श्री। सिधे भगवान बन जाता है । श्री.सिद्धप्रभु ने रुद्रजी की योग्यता को पहचाना और उन्हें वहीं आत्मज्ञान दिया। इसके बाद रुद्रजी कुछ दिनों तक उसी जंगल में गुरु के सान्निध्य में रहे और फिर अपनी माँ के आदेश पर गुरु के साथ उत्तर की तीर्थयात्रा पर निकल पड़े। बाद में बारह वर्ष बाद गुरु-शिष्य वापस आये। बाद में सिद्धप्रभुने पूर्णानंद के नाम से दाभोली मठ का आधिपत्य स्वीकार कर लिया। रुद्रजी को गृहस्थाश्रम स्वीकार करने का आदेश दिया। रुद्रजी पूर्णानन्द के कृपापात्र थे। यद्यपि पूर्णानंद मठ के शासक थे, लेकिन सभी प्रशासन और शिक्षादीक्षादि अनुष्ठान रुद्रजी द्वारा किए गए थे। गुरु की कृपा से एक बार जब वे दक्षिण में श्रृंगेरी पीठ गए तो वहां उन्होंने कुछ ऐसे ब्रह्मसूत्रों के अर्थ बताए जो वहां के पंडितों को नहीं बताए गए थे और सभी को आश्चर्यचकित कर दिया। वे बाघ जैसे भयंकर जानवरों से भी प्रेमपूर्वक व्यवहार करते थे।

– (कु. स. इतिहास)

स्वामी विमलानंद

श्रीमत चिदानन्द के चिरंजीव गोपाल को बाद में विमलानन्द के नाम से जाना गया। अपने पिता की तरह वह भी भगवान के बहुत बड़े भक्त थे। वह श्री दाभोली मठ के शासक के रूप में प्रसिद्ध थे। उन्होंने अपने करियर के दौरान कई दैवीय चमत्कार किए हैं। पाटगांव झील का बांध हर साल टूट जाता सावंतवाड़ी के महाराजने उस तालाब का बांध बनाने के लिए वहां के निवासियों पर सख्त प्रतिबंध लगा दिया। कर वसूल करते समय अधिकारी अत्याचार करने लगे। एक गरीब महिला को उन्होंने रुपये दिये, इसके लिए उसे पीटा गया । जब यह बात विमलानंदस्वामी को पता चली तो उन्होंने राजा को सूचित किया कि उन्हें किसी से धन नहीं लेना चाहिए। 'आज से आठवें दिन । बाँध से बंधी जगदम्बा ।' और सचमुच ८वें दिन गांव के लोगों ने बांध का निर्माण पूरा होते देखा। जाति-पाति के भेद से दूर और दलितों के कैवारी विमलानंद ने भगवान का स्मरण कर महामारी रोग से पीड़ित महारानी के शरीर पर मिट्टी फोड़ दी। एक क्षण में महारानी का रोग दूर हो गया और वह पहले से भी अधिक सुन्दर हो गयीं। अपने

काल के दौरान स्वामी ने ग्रामीण जनता को सच्चे धर्म का उपदेश दिया। स्वामी ने सामवेद का अध्ययन किया था। उन्हें उनकी सभी बीमारियों का सटीक ज्ञान था। एक बार जब कोंकण में वर्षा की कमी हो गयी, तो स्वामी ने मेघराज को बुलाकर वर्षा करायी। स्वामी की योग कुशलता भी महान थी। स्वामी ने धामापूर गाँव की एक बहू को आशीर्वाद दिया। इसलिए कहा जाता है कि उसके समृद्ध खेत का रखवाली अपने आप हो जाता है। पक्षी आज भी उस खेत में नहीं आते। इतनी महान लीला करके स्वामी ने अपना कार्य समाप्त कर लिया।

दक्षिण कोंकण मे गिरीसम्प्रदाय

खानोली के वत्सगोत्री परिवार के हरिप्रभु नामक एक उपनित बट्टू, जिन्हें कुदालदेशकर ब्राह्मण के नाम से जाना जाता है । लगभग ५०० साल पहले उत्तरी हिंदुस्तान से आए ईश्वरगिरि नामक सिद्ध पुरुष से गिरीसंप्रदाय की दीक्षा ली, उनका शिष्यत्व स्वीकार किया और एक संप्रदाय की स्थापना करके संप्रदाय परंपरा की शुरुआत की।

मठ

इस गिरीसम्प्रदाय का मुख्य मठ खानोली गाँव में 'निवती' में है। पुराने दस्तावेज़ों में ऐसे उल्लेख हैं कि इस सम्प्रदाय के स्वामी को परिव्राजक तपोनिधि कहकर सम्बोधित किया जाता था। इनकी परंपरा दशनाम संन्यास के निनार्तोत्वार्य की है। श्रीमत्तोत्काचार्य का मठ बद्रिकाश्रम में है और उस मठ के श्रीगणों के पास गिरि, पर्वत और सागर की अभिधानाएँ हैं। अत: यह संप्रदाय शंकरपरंपरा के परिव्राजकों से संबंधित है।जिस समय खनोली में 'निवती मठ' की स्थापना हुई, उस समय श्री शंकराचार्य के अधीन सोनावड़े में एक मठ था और ज्ञात होता है कि वहाँ से आचरण, व्यापार और प्रायश्चित्त संबंधी कार्य किये जाते थे। खानोली मठ के अलावा इस गिरीसंप्रदाय के केलुस, तेंदोली, वज्रथ और उद्धवगिरी मठ कुडाल प्रांत में हैं। तपोनिधि हरिचरणगिरि की मुख्य समाधि खनोली में निवती मठ में स्थित है, पास में पाँच अन्य समाधियाँ हैं और बाहरी मध्य वर्ग में चार समाधियाँ हैं । जिससे मठ में ही नौ समाधियाँ बनती हैं। मठ के बाहर पीपल के सामने हरिचरणगिरि के एक वाणी शिष्य थे । उनकी समाधि है। मठ में नौ समाधियों में से एक बाघ की है। मठ में विशेष अवसरों पर इस बाघ की समाधि

पर प्रसाद चढ़ाया जाता है। यह बाघ हरिचरणगिरी का पसंदीदा था। इनमें से कुछ परंपराओं के नाम इस प्रकार हैं:-हरिचरणगिरि,नागेंद्रगिरी उद्धवगिरी विश्वनाथगिरी, भगवानगिरी, दत्तगिरी। दत्तगिरी निवती मठ के अंतिम शासक थे। उनका जन्म निवती मठ के अलावा अन्य मठोंसे भी इस मठ की शिष्य परम्परा जारी रही।

खानोली ग्रामके पंचक्रोशी में जीवित समाधि लेनेवाले संतों की शृंखला रही है। एक हजार साल पहले, एकता के सिद्धांत पर 'श्री सिद्धेश्वर, सातेरी, रवळनाथ पंचायत देवस्थान' को स्थापन करने वाले महान व्यक्ति ने सिद्धेश्वर महाराजने जीवित समाधि ली थी। तीन सौ साल बाद,मठ के संस्थापक हरिचरणगिरि ने खानोली के निवतिगिरी मठ में जीवित समाधि ले ली।चार सौ साल बाद पूर्णानंदस्वामी ने पुनः स्थापित दाभोली मठ में जीवित समाधी ले ली। पूर्णानंद स्वामीजीं के बाद उनके शिष्य स्वामी चिदानंदानी आये जिन्होंने 'बागलांची राई' में स्थापित मठ में जीवित समाधि ले ली, जब कि १८९० में गिरि परंपरा के अंतिम गिरी, दत्तगिरीने जीवित समाधी ले ली। आज खानोली तीर्थ एक तीर्थस्थल बन गया है। स्वामी पूर्णानंद मानवसेवा अस्पताल जैसी सुविधाएं दत्तगिरी के निमाण के बाद उनके आत्मबलिदान का परिणाम हैं।

निवती मठाधीशों की परंपरा

१) हरिचरणगिरी (संस्थापक) २) परशरामगिरी ३) सोमगिरी ४) गोविंदगिरी
५) विश्वनाथगिरी ६) भगवानगिरी

(संदर्भ - गोसावी दत्तगिरी , १९९० डा. दि. ग नाईक की 'श्री दत्तगिरी' ग्रंथ)

– प्रा.डॉ बाळकृष्ण रामचंद्र लळीत.
मराठी विभागाध्यक्ष,
चांदमाल ताराचंद बोरा महाविद्यालय,
शिरूर, जि, पुणे, महाराष्ट्र ४१३२१०.
(9665996260/brlalit@gmail.com

क्रमश...

अर्थपूर्णता जीवन की

जीवन के लक्ष्य होते है दो - वेदना से मुक्ती और आनंद की प्राप्ति । सबसे अधिक आनंद की स्थायी स्थिति होती है मोक्ष । आनंद मनोकामनाओं की पूर्तीसे मिलता है । जीवन मे हर दिन हमारे विभिन्न इच्छाओंकी पूर्ति करना इसे काम कहते है । काम हमारा प्रतिदिन का लक्ष्य होता है और मोक्ष अंतिम लक्ष्य है। लक्ष्यपूर्ति के लिए हम बहुत सारे प्रयास करते है। यह प्रयास क्या करना है और कैसे करना है इसकी जो पद्धति या शास्त्र है उसे भारतीय तत्वज्ञान मे धर्म कहते है। इच्छाओंकी पूर्ति के लिए हमे धन प्राप्त करना होता है – उसे अर्थ कहते हैं । एवं, काम और मोक्ष यह हमारी

अधियज्ञ कथं कोऽत्र देहेस्मिन् मधुसूदन ?
इस शरीर में अधियज्ञ कौन है ?
कृष्ण बता रहे हैं...अधियज्ञोऽहमेवात्र देहे देहभृतां वर ..
इस शरीर में, मैं अधियज्ञ हूँ |
कृष्ण अपने को इस देह में यज्ञ बताते हैं |

– विलासानंद महाराज

दो मंजिले हैं, और धर्म और अर्थ यह उन मंजिलोंको हासिल करने के दो साधन हैं। दो लक्ष और दो साधन यह जीवन के चार पुरुषार्थ है। इन चार स्तंभों के आधार पर जीवन का महल हमे निर्माण करना है। मेरी कविता है :

अंधेरेमे रोशनी देता है
उसे प्रकाश कहते है
सपनोंकों ऊंची देता है
उसे आकाश कहते है
जीवन की मंजिल तक पहुचाता है
उसे विकास कहते है ।

जैसे हवाई जहाज उड़के अन्तरिक्ष मे पहुचता है, वैसे जीवन मे विकास के आसमान की ऊँचाइयाँ हासिल करने के लिए उड़ान जरूरी होता है। इस प्रक्रिया में प्रयासोंकी आवश्यकता होती है । जीवन का अर्थशास्त्र यह है की हमारे उद्दीष्टोंकों हासिल करने के लिए अपने साधनोंका सर्वोत्तम विनियोग करना चाहिए। साधनसंपत्ति मर्यादित होती है। अत: उसका इस्तेमाल कुशलतापूर्वक करना चाहिए । कामयाबी के लिए भगवान ने हमे तीन साधन दिए हैं– समय, धन और उर्जा । यह तीनों अपर्याप्त होते हैं । अत: उनका विनियोग सम्पूर्ण कार्यक्षमता के साथ करके जीवन की मंजिल तक पहुचना है। समय बहुत कीमती होता है। कालचक्र का नियोजन जीवन के हर दिन आवश्यक है । जिंदगी की बुनियाद उसका नाम सामर्थ्य। समर्थता ही जीवन है, दुर्बलता मृत्यू । सामर्थ्य- शरीर और मन दोनोंका। सेहत के लिए नियमित तौर पर व्यायाम और मन की शक्ती के लिए परमात्मा की आराधना आवश्यक है। परमात्मा से एकरूपता की स्थिति का अनुभव इसका नाम उपासना। वह हमे ऊर्जा देती है। चेहेरे पे मुस्कान, दिल में समाधान और हृदय में आत्मज्ञान यही जीवन का मुक्तिधाम।शुद्ध आचार, परिपक्व विचार और सदाचार के संस्कार देते हैं जीवन को आकार और करते हैं सपने साकार । सपनोंकों पूरा करके खुशी पाने का संजीवनी मंत्र है – सं-जीवन संतुलित जीवन ।

तीसरा साधन है अर्थ । जीवन मे सशक्त तन, समर्थ मन इनके साथ पर्याप्त धन आवश्यकता होता है। धनप्राप्ति के मार्ग नैतिक रूपसे सही होने चाहिए। उचित माध्यमसे धनकी प्राप्ति, उचित कारणके लिए उसका विनियोग, पर्याप्त प्रमाणमे उसका उपभोग

और अधिकतम दानयोग यह आदर्श जीवन की चतु:सूत्री है। इच्छाओंकी पूर्ति जिससे होती है उसका नाम है धन । और इच्छापूर्ति का आनंद जो देता है उसका नाम है मन । मन की शुद्धि, धन की वृद्धि और जीवन की समृद्धि इसी का नाम यशसिद्धि।

धन के साथ रिश्ते जोड़ना भी जरूरी है। जीवनमे रिश्तोंका महत्व असाधारण है। रिश्तोंकी केवल संख्याही नहीं बल्कि दृढ़ता जादा जरूरी है। कुछ रिश्ते ऐसे होनेही चाहिए जिनके पास बिना किसी नुकसान हम अपना दिल खोलकर बात कर सकें और कुछ ऐसे भी होने चाहिए जो हमे किसीभी संकट मे आधी रातको भी तुरंत सहायता करें। रिश्तोंमें स्नेहभाव महत्वपूर्ण है। स्नेह नामकी एक जादुई सामग्री ऐसी होती है जिसे जितना जादा खर्च करे या बाटे उतनी वह बढ़ जाती है। स्नेह का असीम आविष्कार उसका नाम कृतज्ञता ! हमारी संस्कृति मे ढलते हुए सूरजको भी अर्घ्य देनेका रिवाज है। वह जा रहा है अब उससे कुछ मिलनेवाला नहीं है लेकिन दिनभर उसने जो सबकुछ हमे दिया उसके लिए शुक्र अदा करना जरूरी है।

जिंदगी के सफर की सर्वश्रेष्ठ ऊर्जा है आशा । मनको दुखसे दूर रखने की दवा है आशा । आशा यह जीवन की सबसे बड़ी शक्ति होती है। दिनभर सूरज का दर्शन नहीं मिला तो भी रातके चंद्रमा और सितारोंका इंतजार करना इसी का नाम आशा। अंध:कार से भरी हर रात सोने जैसे किरण लेकर सूरज को जन्म देती है। अनंत आशा और सही दिशा यही राजमार्ग है। हर कदम अर्थपूर्ण उठाना और हर पल में मंजिल की तरफ प्रगति करना इसी का नाम जिंदगी । यही है अर्थपूर्णता जीवन की ।

– डॉ. आशुतोष रारावीकर
संपर्क : ayraravikar@gmail.com